मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249
अक्षर वार्ता
मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष - 18 अंक - 11
(सितंबर 2022)
Vol - XVIII Issue No - XI
(September - 2022)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 6.375

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2349 - 7621
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /- रुपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-18 अंक - 11, सितंबर - 2022
Vol - XVIII, Issue No. XI
September - 2022
Impact Factor - 6.375
aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ. मोहन बैरागी

संपादक मंडल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा

सहायक सम्पादक :-

डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र मार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- Union Bank of India,

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- UBIN0907626 Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता

43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट:- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।// शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही है।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

» धार्मिक कथनों की अर्थवत्ता का विश्लेषण : असंज्ञानवादी मत
डॉ. अजन्ता गहलोत 18

» थर्ड जेंडर : सामाजिक बहिष्कार से सामाजिक विमर्श तक
बुशरा खान 23

» भूमंडलीकरण : ब्रांड संस्कृति और मीडिया
पूजा यादव 27

» जैनेन्द्र कुमार के 'त्यागपत्र' में चित्रित स्त्री जीवन
वीरेन्द्र कुमार यादव 29

» आधुनिक परिवर्तनशील परिवेश में एकात्म मानववाद की सार्थकता
गौरव कुमार सिंह 32

» वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की प्रासंगिकता
किरन यादव 34

» "जैनेन्द्र कृत त्यागपत्र की मृणाल और पितृसत्ता के विविध आयाम"
डॉ. फिरोज आलम 36

» समाज की रग-रग से वाकिफ व्यंग्यकार
डॉ. भगीरथ बड़ोले
अंकिता जाटवा 39

» शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम 2009
गरिमा भाटी 42

» प्रेमचंद का साहित्य दर्शन
मिन्नु जोसेफ 45

» "हिंदी साहित्य में दलित चेतना : मार्मिक पक्ष"
शहज़ादी खातून 48

» मालवी लोकगीतों में पारिवारिक भावना
पूजा पाटीदार 63

» सहजता का मूल्य और भवानी प्रसाद मिश्र की कविता
सुभाषचन्द गुप्त 56

» संवैधानिक मूल्यों की काव्याभिव्यक्ति : मुक्ति-दूत
डॉ. संजय रणखांबे 61

» मानवीय संबंधों के यथार्थ का अंकन : भीष्म साहनी की कहानियों में
डॉ. चन्द्रवदना 65

» केदारनाथ अग्रवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
रमेश कुमार 68

» अलका सरावगी के उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में पारिवारिक कलह एवं द्वेष
डॉ. योगेश चन्द्र यादव, निर्मेश कुमारी 70

» सनातन आश्रमों में महिला गुरू आश्रम का समाज कल्याण के क्षेत्र में योगदान
गुलजार सिंह ठाकुर 72

» गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में लोकमंगल की अभिव्यक्ति
श्रीमती पुष्पलता 75

» गोदान : नए संदर्भों में
डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 78

» मेवाड़ सर्किट के प्रमुख लोक देवी-देवता और पर्यटन का विकास
डॉ. मनोज दाधीच, राहुल पालीवाल 81

» कामायनी में श्रृंगारिकता का स्वरूप
रोशनी, डॉ. मधुबाला गुप्ता 84

» 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में संवेदना का स्वरूप
डॉ. सतीश कुमार सिंह 89

» 'दक्षिण से उदित हुआ भक्ति का सूर्य, उत्तर आकर हुआ प्रखर'
शालिनी बड़ोले 'रेवा' 93

» गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में अलंकार सौन्दर्य
श्रीमती पुष्पलता 95

» बालमुकुन्द गुप्त के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 99

» नवजागरण का अभ्युदय और हिंदी पत्रकारिता
सुविज्ञा प्रशील 101

» ज़िन्दगी 50-50 होती ही है
पुष्पा कुमारी चौहान 103

» स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद
प्रा. डॉ. शोभा यशवंते 106

» भारत में लोहे की प्राचीनता का अवलोकन
डॉ. अनिल कुमार यादव 108

» रेडियो नाट्य के विकास में रामेश्वर सिंह कश्यप का अवदान
कुंजन कुमारी 110

» मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में समानता का सच
डॉ. प्रतिमा सिंह 113

» वर्तमान समाज में मन्नू भंडारी के उपन्यास आपका बंटी की प्रासंगिकता
रंजीता मिर्धा 115

» Musical Aura of Hazrat Amir Khusrau in Delhi Sultanat as Gleaned form His work
Dr. Parul Lau Gaur,
Dr. Suniti Dutta 117

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.376
Vol - XVIII, Issue - XI, September - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

"जैनेंद्र कृत त्यागपत्र की मृणाल और पितृसत्ता के विविध आयाम"

डॉ. फिरोज आलम

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर

जैनेंद्र मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। मुंशी प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में जैनेंद्र कुमार का महत्वपूर्ण योगदान है। जैनेंद्र, प्रेमचंद का अनुकरण नहीं प्रेमचंद युग का विस्तार हैं। जैनेंद्र का जन्म 2 जनवरी सन1905 को उत्तर प्रदेश प्रांत के कौडियागंज गांव में हुआ था। गुरुकुल तथा काशी विश्वविद्यालय में जैनेंद्र कुमार की शिक्षा हुई। सन 1929 में गांधी द्वारा चलाए जा रहे असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर जैनेंद्र राजनीति में शामिल हो गए। इनके लेखन पर गांधीवादी दर्शन का विशेष प्रभाव है। सुभद्रा कुमारी चौहान और माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व ने इन्हें राष्ट्रीय सेवाके लिए प्रेरित किया। नौकरी न मिलने पर जीविकोपार्जन के लिए पेशे के रूप में जैनेंद्र ने रचना कार्य आरंभ किया था। पहली कहानी खेल 1928 में विशाल भारत में प्रकाशित हुई थी जिसके लिए उन्हें 4 आने मिले और यहां से जैनेंद्र का लेखन का सफर शुरू होता है।1929 में जैनेंद्र का पहला उपन्यास 'परख' प्रकाशित हुआ। उसके बाद सुनीता (1935) त्यागपत्र (1937) कल्याणी (1939) सुखदा (1952) विवर्त (1953) व्यतीत (1953) जयवर्धन (1956) मुक्तिबोध (1965)अनंतर (1968) अनाम स्वामी (1974) और दशार्क (1985) आदि लिखकर हिंदी उपन्यास को नई दिशा प्रदान की।इन उपन्यासों मेंपात्रों के भीतर की व्यथा, उनकी उलझन और द्वंद, पात्रों की शंकाओं को आधार बनाया गया है। नारी के मन की बात टटोलने के पारखी जैनेंद्र के उपन्यास स्त्री केंद्रित हैं। स्त्री की समस्याएं और उनके समाधान के लिए समस्याओं की जड़ तक पहुंचने का प्रयास जैनेंद्र का रहा है। जैनेंद्र ने जब लेखन कार्य शुरू किया था तो वह एक तरह से परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष का समय था। जैनेंद्र की रचनाएं परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन लिए हुए हैं,ना उन में आधुनिकता का अंधानुकरण है और ना ही परंपरा के प्रति जड़ बने रहने की आस्था। स्त्री को वह पुरुषों से श्रेयस्कर मानकर पूर्ण गरिमा और गहनता से साहित्य में स्थान देते हैं।

जैनेंद्र का 'त्यागपत्र' उपन्यास मृणाल के आत्म-पीड़न की गाथा का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। अनमेल विवाह की समस्या, प्रेम की समस्या, जीवन साथी ना चुनने देने की समस्या,नारी जाति संबंधी सभी समस्याओं का यथार्थपरक विश्लेषण किया गया है। यह समस्याएं सिर्फ मृणाल की नहीं हैं,भारतीय समाज की अधिकांश नारियां इन समस्याओं का शिकार रही हैं।

मधुरेश के अनुसार- 'उपन्यास के प्रभाव के रूप में वे एक संस्कार की बात करते हैं जो मन में धीरे-धीरे उगता और विकसित होता चलता है। वह शिक्षा और उपदेश नहीं देता, चित्र में भाव की तरह रमा रहता है। वहीं मस्तिष्क की विवेचना को पार कर, सीधे अनुभूति में जाकर चुभता है।"

'त्यागपत्र' उपन्यास 1937 में लिखा गया। इस उपन्यास नेजैनेंद्र का स्थान हिंदी साहित्य में और अधिक मजबूत कर दिया है। उपन्यास में कथा को आत्मकथा के रूप में चीफ जस्टिस एम दयाल ने लिखा है जो उपन्यास में प्रमोद के नाम से उपस्थित है। उपन्यास की संपूर्ण कथा मृणाल और प्रमोद के संवाद के रूप में आगे बढ़ती है। मृणाल के दुख-दर्द का वर्णन प्रमोद के माध्यम से होता है। यह उपन्यास रूढिग्रस्त भारतीय समाज में स्वतंत्र आधुनिक नारी के मौन प्रतिरोध को रेखांकित करता है।

मृणाल 'त्यागपत्र' उपन्यास की नायिका है। स्कूली जीवन में शीला के भाई से प्रेम करने का भयंकर परिणाम यह होता है कि उसकी बेंत से पिटाई की जाती है। उसकी पढ़ाई छुड़वा दी जाती है और जल्दबाजी में फूल जैसी कोमल मृणाल की एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से शादी कर देते हैं। सभ्य समाज में प्रेम करना पाप है लेकिन मृणाल को उसकी इच्छा के विरुद्ध ऐसे नरक में डालना पाप नहीं है जहां ना उसका मन मिलता है और ना ही पति से उम्र। घर में भाभी द्वारा बेंत खाने का साक्षी तो प्रमोद रहता है लेकिन ससुराल में बेंत खाने की बात वह स्वयं प्रमोद को बताती है- 'बेंत खाना मुझे अच्छा नहीं लगता। न यहां अच्छा लगता है न वहाँ अच्छा लगता है।" लेकिन शारीरिक प्रताड़ना और मानसिक पीड़ा सहना उसकी जिंदगी का अंग बन गया है। उसका भाई भी प्रेम करने कीबात पर पत्नी द्वारा मृणाल की डंडे से पिटाई करने पर चुप रहकर सहमति प्रकट करता है।

विवाह के बाद जब वह घर आती है तो प्रमोद उससे फूफा के साथना जाने की जिद करता है क्योंकि वह उसे बताती है कि मुझे जहाँ भेज दिया गया है, मेरा मन वहां का नहीं है। वह प्रमोद से कहती है- 'विवाह की ग्रंथि दो के बीच की ग्रंथि नहीं है,वह समाज के बीच की भी है। चाहने से वह क्या टूटती है? विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं व्यवस्था का प्रश्न है। वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है? वह गांठ है जो बँधी की खुल नहीं सकती, टूटे तो टूट भले ही जाए। लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है?'

भारतीय समाज में विवाह की ग्रंथि को तोड़ना संस्कृति के विरुद्ध समझा जाता है। चाहे लड़की पर अत्याचार-उत्पीड़न हो रहा हो, उसके आत्मसम्मान को कितना भी चोट पहुंच रही हो,लेकिन उसको यही समझाया जाता है कि तुम्हारी जिम्मेदारी है हालात के साथ समझौता करना। घर की इज्जत का बोझ लड़की के कंधों पर डाल कर यह समाज उस की छटपटाहट,दुख, विवशता से मुंह मोड़ कर सभ्य बने रहने का ढोंग करता है। मृणाल ससुराल नहीं जाना चाहती है। भाई के सामने फूट-फूटकर रोती है,लेकिन भाई-भाभी सब इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में इतने जकड़े हैं कि उसका मैके रुकने से बेहतर रोपीटकर ससुराल जाना औरपति के कदमों में

Scanned with OKEN Scanner

मृत्यु पाना ही ठीक लगता है। भाई,मृणाल के साथ नहीं सामाजिक मान्यताओं के साथ खड़ा है। वह मृणाल से कहता है- 'पति के घर के अलावा स्त्री को और क्या आसरा है? यह झूठ नहीं है मृणाल कि पत्नी धर्म पति है। घर पति-गृह है। उसका धर्म,कर्म और उसका मोक्ष भी वही है।''यह है हमारा समाज और इसके प्रचलित नियम कानून।यह कैसा धर्म है जिसको निभाने की जिम्मेदारी सिर्फ पत्नी की है। पति बेंतसे मारे, चाहे पत्नी पर झूठे अभियोग लगाए, लेकिन पत्नी का मोक्ष फिर भी उसी पति की सेवा द्वारा संभव है। वह अत्याचार सहने के लिए विवश है, क्योंकि भाई के घर में उसके लिए स्थान नहीं है। पति को सुखी रखना ही उसका उद्देश्य होना चाहिए। भारत में साधारण स्त्री के जीवन की यही वास्तविकता है। उसे भली-भांति समझा दिया जाता है कि तुम्हारे पति का घर ही तुम्हारा वास्तविक घर है।

पति के साथ यातनापूर्ण दांपत्य जीवन में मृणाल कभी खुश नहीं रही। मृणाल का पति के साथ जो संबंध है उसमें ना प्रेम है ना विश्वास और ना ही सम्मान। सिर्फ सामाजिक मर्यादा और प्रतिष्ठा के लिए साथ रहने की ऐसी यातना मृणाल जैसी अनेक स्त्रियों को झेलनी पडती है। पतिव्रता के धर्म और पति के प्रति सच्चाई निभाने के लिए स्त्रीत्व को प्रकट करती हुई मृणाल अपने पति को शीला के भाई के पत्रों के विषय में बता देती है। यह सच्चाई शंकालु पति के हृदय को आघात पहुंचाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि वह पति की आंखों में कांटे की तरह चुभने लगीऔर एक दिन वहउसे दुश्चरित्रा बताकर कोठरी में लाकर छोड़ जाता है। यही से मृणाल के शोषण और दर-दर भटकने की कथा आरंभ हो जाती है। वह पतिव्रता के नाम पर पति पर बोझ ना बनकरकर उसके रास्ते से हट जाती है।

वह प्रमोद से बताती है 'पति को मैंने नहीं छोड़ा उन्होंने मुझे छोड़ा है। मैं स्त्री-धर्म को पतिव्रत धर्म ही मानती हूं। उसका स्वतंत्र धर्म में नहीं मानती।क्या पतिव्रता को यह चाहिए कि पति उसे नहीं चाहता तब भी वह अपना भार उस पर डाले रहे?'[5]

मृणाल स्त्री धर्म और पत्नी धर्म दोनों को निभाने का प्रयास करती है। लेकिन शंकालु पति द्वारा उत्पन्न परिस्थितियाँ मृणाल को इस प्रयास में सफल नहीं होने देती हैं।

बाद में मृणाल किसी कोयले की दुकान वाले बनिए के साथ रहने लगी जो सभ्य समाज के लिए स्वीकार्य नहीं था। जिसने अपराध ना करने पर भी बेंत खाई हो, उसको यह समाज पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के साथ आने पर क्षमा कैसे कर सकता है? किन परिस्थितियों में मृणाल यहां तक पहुंची है? उसका दर्द,उसकी मजबूरी, उस पर हुई हिंसा से किसी को कोई गुरेज नहीं है। वह मृणाल की दुर्दशा के लिए उसी को जिम्मेदार मानते हैं। मृणाल को यहां तक पहुंचाने में जिम्मेदार कौन है? भाई? भाभी? पति? या वह स्वयं? आत्म पीड़ा को सहन करने की हिम्मत मृणाल की विशेषता है या मजबूरी? इन सब सवालों को जैनेंद्र पाठक के सामने रखते हैं। कोयले वाले के साथ मृणाल अभावग्रस्त जीवन बिताते हुए भी उसके प्रति ईमानदार रहती है। उसने उसकी सहायता को कृतज्ञता के साथ अंगीकार कर लिया है। जो स्त्री अन्य पुरुष को छोड़कर जाने को भी पाप समझती है। उसकी सेवा में त्रुटि नहीं करती।उसको पति मानकर पतिव्रता का धर्म निभाती है तो फिर वह अपने पति के साथ पति धर्म क्यों और कैसे ना निभाती? उसे सहज स्वाभाविक रूप से आदर्श पत्नी बनने का अवसर दिया ही नहीं जाता है। मधुरेश के शब्दों में 'मृणाल की भटकन अंततः उसकी मृत्यु से ही समाप्त होती है। अवसर मिलने पर मृणाल एक आदर्श पत्नी बन सकती थी। तब शायद सतीत्व और नारीत्वमें कोई द्वंद भी नहीं होता। लेकिन हमारा समाज स्त्रीत्व के सहज स्वाभाविक मार्ग को अवरुद्ध कर के स्त्री से सतीत्व की अपेक्षा करता है।''

वह ये बात भी भली-भांति जानती है कि यह पुरुष उसे ज्यादा दिन पनाह नहीं दे पाएगा।वह उसे छोड़कर चला जाएगा और उसे भी कोठरी छोड़कर कोई दूसरा ठिकाना तलाशना होगा।' वह जान गया है कि मैं उसकी सर्वस्व नहीं हूं, मैं बस एक बद्जात व्यभिचारिणी स्त्री हूं।''

नैतिकता से भरे समाज में खुद को व्यभिचारिणी मानने का जो दंभ है यह कहां से आया है? समाज की नजरों से, अपनों की आंखों में दिखे तिरस्कार के भाव से, पति द्वारा चरित्रहीन समझे जाने के आरोप नेउसे खुद की भी नजरों में गिरा दिया है। यहां तक कि जिस प्रमोद के लिए बुआ ही सब कुछ थी और बुआ के लिए प्रमोद। वह भी खुद को मृणाल से घृणा करने से रोक नहीं पाता। सिर्फ समाज हीमृणाल को संदेहकी दृष्टि से नहीं देखता है, सच झूठ का निर्णय करने वाले चीफ जस्टिस प्रमोद के हृदय में भी समान रूप से उठता है। वहमृणाल की बातें सुनकर सोचता है- 'पति ग्रह को छोड़कर यहां गंदे व्यभिचार में रहने वाली नारी पति-धर्म की बात करती है और सुनता हुआ एक पढ़ा-लिखा मुझ जैसा समझदार युवक उस नारी को लांछित नहीं करता बल्कि उसके प्रति और खींच कर रह जाता है।''

प्रमोद द्वारा शादी में बुलाए जाने की बात पर भी वह यह कहती है- 'मैं समाज को तोड़ना- फोड़ना नहीं चाहती हूं। समाज टूटी की फिर हम किस के भीतर बनेंगे? या कि किसके भीतर बिगड़ेंगे? इसलिए मैं इतना ही कर सकती हूं कि समाज से अलग होकर उसकी मंगलाकांक्षा में खुद ही टूटती रहूं।''

समाज मृणाल कोकुलटा समझता है। समाज को मृणाल की परवाह नहीं है, लेकिनमृणाल समाज से कटकर भी उसकीमंगल कामना ही करती है। लेकिन यह मृणाल के चरित्र की विशेषता है कि वह कष्ट सहकर भी दूसरों का भला चाहती है।

कोयले वाला पुरुष अंत में मारपीट कर उसका सारा धन हड़प कर छोड़ कर भाग जाता है। वह सिलाई करके किसी तरह गुजारा करती है। उस कोयले वाले से उसे बच्ची भी होती है जो भूख से मर जाती है।

इस उपन्यास में मृणाल तीन पुरुषों के संपर्क में आती है। जिनकी भूमिका उसके जीवन को सुखमय बनाने के बजाय नारकीय जीवन की और ही धकेलने में दिखाई देती है। जो समाज पितृसत्तात्मक व्यवस्था से संचालित होता है, वहां नारी के उत्पीड़न शोषण से किसी को सहानुभूति नहीं होती है। भारतीय समाज एक ऐसी मानसिकता से संचालित है, जहां स्त्री के शोषण को सामान्य व्यवहार समझ कर उसे सही ठहराया जाता है। चाहे मृणाल की भाभी द्वारा उसको बेंतसे मारना हो, या भाई भाभी द्वारा अधेड़ उम्र के व्यक्ति से उसका अनमेल विवाह कराना हो, या पति द्वारा अभियोग लगाना, मारपीट करना हो, कोयले वाले द्वारा शारीरिक और मानसिक शोषण हो,पितृसत्तात्मक समाज को दोष मृणाल में ही दिखाई देगा। पढ़ा-लिखा झूठ सच का निर्णय करने वाला जजीकरता उसका भांजा भी अपनी बुआ के लिए न्याय नहीं कर पाता है। बाद में बुआ के मरने की खबर विनोद को इतना ग्लानि से भर देती है कि वह बुआ के साथ न्याय नही कर पाया इसलिए वह जज़ी से इस्तीफा दे देता है। मृणाल भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के दबाव में बिना प्रतिरोध किए सब कुछ सहन करती जाती है जैसे वहस्वयं भी अपने आपको इन सब प्रताड़नाओं के लिए मानसिक तौर पर तैयार कर चुकी है। मृणाल द्वारा विरोध

Scanned with OKEN Scanner

उपन्यास में कहीं दर्ज नहीं हुआ है प्रेमी को छोड़ अन्य से शादी का फैसला हो,यापति द्वारा छोड़ने का फैसला हो वह सब स्वीकार करती जाती है शादी किससे होनी है? कब होनी है? यह निर्णय मृणाल का परिवार लेता है। मृणाल का फैसला पितृसत्तात्मक समाज में कोई मायने नहीं रखता है। जबरन विवाह, घरेलू हिंसा, बिना तलाक के छोड़ देना यह सब पितृसत्तात्मक सोच केही परिणाम है। मृणाल द्वारा अपने को सबसे अलग कर दर-दर भटकने का जो निर्णय है वह भी इसी मानसिकता से उसने लिया है। वह जानती है ना उसके लिए अपने घर में जगह है ना पति के घर में और ना ही यह समाज उसे स्वीकार कर पाएगा। क्योंकि पतिव्रता धर्म का पालन ना कर के बिना शादी के अन्य पुरुष के साथ रहने का उसका जो फैसला है वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था की संवेदना पर गहरी चोट है जो नैतिकता से भरे इस सभ्य समाज में स्वीकार्य नहीं है।

अंत में परिवार से बहिष्कृत मृणाल को समाज के उस हाशिये पर रख दिया जाता हैं जहाँ अपने चरित्र को साबित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती।

सभ्य पढ़े लिखे समाज की नकारता ही मृणाल को बदनाम बस्ती तक पहुंचाती है। समाज की प्रताड़ना और घृणा मृणाल को इस नारकीय गली तक पहुंचाने की जिम्मेदार है। चिड़िया बनने की चाह रखने वाली मृणाल को भारतीय सामाजिक संरचना पत्नी बनाती है,फिर परित्यक्ता और अंत में कुलटा बनाकर छोड़ती है।

जैनेंद्र के यहां बाह्य घटनाएं महत्वपूर्ण नहीं हैं,व्यक्ति के अंतर्मन में घटित घटनाएं अधिक महत्व रखती हैं। उनकी दृष्टि व्यक्ति को केंद्र में रखती है समाज को नहीं। व्यक्ति के आंतरिक जगत के व्यापारों का चित्रण,व्यक्ति की संवेदना का चित्रण, मनोजगत की आंतरिक ग्रंथियों का चित्रण,व्यक्ति के मनोविज्ञान का चित्रण जैनेंद्र के उपन्यासों में मिलता है। त्यागपत्र उपन्यास के माध्यम से जैनेंद्र विवाह संस्था, प्रचलित नियम कानून, रूढ़िवादिता पर सवाल करते हैं और इस बात का संकेत करते हैं कि इन मान्यताओं को तोड़नेकी जरूरत है। नैतिक मान्यताएं,रूढ़ियां, झूठी सामाजिक मर्यादा के नाम पर नैतिक बंधन मृणालकी स्वतंत्रता को बाधित करने के मुख्य तत्व हैं। मृणाल बिना प्रतिरोध किए अपने मौन द्वारा ही समाज की झूठी मान्यताओं और विवाह संस्था की वास्तविकता को उजागर करती है। घर की चौखट से सीधे बाजार में पहुंच जाती है। बाहर से वह भले स्वतंत्र नहीं है लेकिन मन से वह स्वाधीन है। इस उपन्यास में जैनेंद्र ने मृणाल को केंद्र में रखकर पितृसत्तात्मक समाज में नारी के शोषण के विविध प्रकारों को उजागर किया है।मृणाल के मन को समझने वाला कोई नहीं है। प्रेम करना अनैतिक है लेकिन अनमेल विवाह करना अनैतिक नहीं है। मृणाल जिस नरक से गुजरती है वह अनमेल विवाह से उत्पन्न समस्याओं का ही परिणाम है। आधुनिकता के दौर में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की छटपटाहट को जैनेंद्र ने चित्रित किया है। इस उपन्यास द्वारा जैनेंद्र पूरी सामाजिक संरचना से सवाल करते हैं कि क्या प्रमोद के त्यागपत्र या मृणाल के आत्म पीड़न द्वारा सामाजिक व्यवस्था में कोई बदलाव संभव है? सतीत्व,पतिव्रत धर्म, त्याग-भावना,सामाजिक मर्यादा इन सब को निभाने की जिम्मेदारी सिर्फ स्त्री कीही क्यों है? पुरुष का इन मानवीय मूल्यों के प्रति कोई कर्तव्य क्यों नहीं बनता है? जीवन और समाज से जुड़े विभिन्न सवालों को जैनेंद्र ने इस उपन्यास में उठाया है।

'यह उपन्यास घनीभूत वेदना का ऐसा मर्मस्पर्शी विज़न है जो मन को पूर्णतया उद्वेलित कर देता है और व्यक्ति यह सोचने पर विवश हो जाता है कि नारी की इस भयानक दुर्गति का उत्तरदायित्व किस पर है सड़ी गली परंपराओं पर जहां नारी की स्वतंत्रता अभिशाप है,जहां वह पुरुष की दासी बनने के लिए विवश है, क्योंकि उसके जीने का कोई आर्थिक आधार नहीं है।'[9]

संदर्भ सूची:-

1. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन,प्रकाशक- सुमित प्रकाशन, अष्टम संस्करण 2018, पृष्ठ 69
2. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकरबम्बई,प्रकाशन 1937, पृष्ठ 28
3. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937, पृष्ठ 26
4. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937, पृष्ठ 29
5. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937, पृष्ठ 68
6. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन,प्रकाशक- सुमित प्रकाशन, अष्टम संस्करण 2018, पृष्ठ 73
7. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937, पृष्ठ 75
8. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937,पृष्ठ 77-78
9. जैनेंद्र,त्यागपत्र,प्रकाशक-हिंदी ग्रंथ रत्नाकर बम्बई, प्रकाशन 1937, पृष्ठ 80
10. वार्ष्णेय,लक्ष्मीसागर,हिंदी उपन्यास उपलब्धियां, प्रकाशक- अरविंद कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन,पृष्ठ 39

Scanned with OKEN Scanner